☆ नृत्य कला ☆

- मनोरंजन हेतु आयोजित वह कला जो भावात्मक अभिनय पर आधारित है।

- नृत्य 2 प्रकार के होते है - (1) शास्त्रीय नृत्य
  (2) लोक नृत्य

[1] शास्त्रीय नृत्य

- वह नृत्य जो नियमों में बन्धे होते है अर्थात् संगीत, लय, ताल, सुर इत्यादि पर आधारित होते है।

- राजस्थान सहित पुरे उत्तर भारत का एक मात्र शास्त्रिय नृत्य "कत्थक" है।

☆ कत्थक नृत्य ⇒ कथा कहने वाला।

आदिम घराना - जयपुर

प्रर्वतक /जनक - भानु जी महाराज

जयपुर कलाकार - भावशंकर
दयाशंकर
प. उदयशंकर ← भारतीय संगीत बैले का जनक
← उदयपुर

Launchidea.in

महिला कलाकार → (1) प्रेरणा श्रीमाली
(2) सितारा देवी
(3) उमा शर्मा

जयपुर कत्थक विशेषताएँ →

(1) जयपुर कत्थक की मुख्य विषयवस्तु धार्मिक व पौराणिक है।

(2) इसमें महिला व पुरुष दोनों भाग लेते हैं। (युगल)

(3) इसका मुख्य आकर्षण → "घाटा" ←
(नृत्य के दौरान जमीन से पैर नहीं उठाना)

(4) जयपुर में कत्थक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना 1977-78 में।

- कत्थक का वर्तमान घराना ⇒ लखनऊ/बनारस

प्रवर्तक – बिरजु महाराज (कत्थक सम्राट)

वर्तमान कलाकार - नंद किशोर कपोतें।

Launchidea.in

[B] लोक नृत्य

- वह नृत्य जो लोगो की स्थानिय मान्यताओं पर आधारित होते है अर्थात् जटिल नियमों रहित होते हैं।

- RJ का राज्य लोकनृत्य - "घुमर"

☆ घुमर / घुम्मर ⇒

उत्पत्ति → मध्य एशिया का "भ्रंग नृत्य" से।

- नृत्य की शुरूआत भील जनजाति द्वारा माता सरस्वती की आराधना में।

उपनाम ⇒ नृत्यों का सिरमौर / हृदय / आत्मा
रजवाड़ी नृत्य

नृत्य का अवसर ⇒ गणगौर, छोटी तीज, राजकीय कार्यक्रम

- जोधपुर महाराजा उम्मेद सिंह ने इस नृत्य को सर्वाधिक बढावा दिया।

विशेषताएँ ⇒ (1) केवल महिलाएँ भाग लेती हैं। महिलाओं की संख्या निश्चित नहीं है। अब तक सबसे बडा घुमर 2024 - जयपुर में आयोजित। (लगभग 6000 महिलाएँ)

(2) नृत्य के समय शहनाई, ढोलक, व नगाड़ा वाद्य का प्रयोग।

(3) नृत्य RJ की पारम्परिक वेशभूषा - कुर्ती, कांचली, 80 कली
का लहंगा आदि। में होता है।

(4) नृत्य का मुख्य आकर्षण हाथो का कलात्मक प्रदर्शन
जिसे कहरवा कहा गया है।

(5) नृत्य अष्टताल पद्धति पर आधारित अर्थात कहरवा
8 सवाई का होता है।

- घुमर नृत्य को प्रोत्साहित करने हेतु संतरामपुर की राजमाता
गोवर्धन कुमारी के प्रयासो से -
घुम्मर गणगौर अकादमी, 1986, मुम्बई

झुमरियो => अविवाहित कन्याओं का घुमर

Imp. लुर => गरासिया महिलाओं का घुमर

Launchidea.in

* अध्ययन की दृष्टि से लोक नृत्य 4-भागों में बांटा जाता है-

(1) व्यवसायिक लोक नृत्य

(2) धार्मिक लोकनृत्य

(3) जातीय व जनजातिय लोक नृत्य

(4) क्षेत्रीय लोकनृत्य.

[1] व्यवसायिक लोकनृत्य

- वह लोकनृत्य जिसके आयोजन का मुख्य उद्देश्य केवल आर्थिक क्रियाएँ है।

- इस श्रेणी में मुख्य रूप से 3 नृत्य शामिल है।

(1) भवाई नृत्य ⇒

उत्पत्ति - मुलत: गुजरात के "मटका नृत्य" से।

RJ में प्रसिद्ध - (1) उदयपुर
(2) केकड़ी, AJ

जनक - नागौजी जाट व बाघोजी जाट

विशेषताएँ - (1) नृत्य में महिला व पुरुष दोनो भाग लेते है।
(2) सिर पर मटकों की संख्या - 7/8
(3) नृत्य के दौरान नंगे पैर - तलवार, तलवार, काँच के टुकडे, थाली/ग्लास के किनारे इत्यादि पर

करतब दिखाया जाता है अतः स्टंट नृत्य के नाम से लोकप्रिय।

(4) RJ का एकमात्र लोकनृत्य जिसपर शास्त्रीय लोकनृत्य का प्रभाव दिखाई देता है।

(5) शांता गाँधी द्वारा रचित नाटक - "जसमा ओडण" भवाई नृत्य के साथ प्रदर्शित होता है। ↓ जसमन देवी ओड पर

(6) सगोजी - सगीजी, गोमा - गोमी, आँचल - साचल व बोरा - बोरी इत्यादि भवाई नृत्य के प्रकार हैं।

प्रसिद्ध कलाकार ⇒ (A) महिला कलाकार

(1) पुष्पा व्यास — प्रथम कलाकार
(2) अस्मिता काला — लिम्का बुक में दर्ज (1ल्प मटके)
(3) श्रेष्ठा सोनी — लिटिल वंडर
(4) वीणा अजमेरा — इस नृत्य को ज्ञानदीप कहा
(5) ज्योत्सना शर्मा
(6) कृष्णा व्यास छंगाणी
(7) तारा शर्मा
(8) द्रोपदी
(9) कुसुम

(B) पुरुष कलाकार ⇒

(1) रूपसिंह
(2) प्रदीप पुष्कर
(3) सागीलाल सागडिया — नृत्यमणि
(4) दयाराम भील — भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर ↑ की सहायता से भवाई को संरक्षण दिया

(2) कच्छी घोड़ी नृत्य ⇒ सीकर, डीडवाना - कुचामन

- 8 राजस्थानी लोगो द्वारा 260 मराठाओं को पराजित करने की खुशी में।

प्रसिद्ध - शेखावाटी प्रदेश

आयोजन अवसर - (1) विवाह
(2) मेले

विशेषता →

(1) केवल पुरुष भाग लेते हैं। (संख्या = 8)

(2) प्रत्येक पुरुष कलाकार कमर पर बाँस की घोड़ी बांध के रखता है।

(3) वाद्ययंत्र - झांझ

(4) लोकगीत - लशकारिया, बींद, रसाला

(5) नृत्य का मुख्य आकर्षण - पैटर्न कला
(i) फुल का खिलना - मुरझाना
(ii) पंक्ति का बनना - बिगड़ना
(iii) पिरामिड बनना
(iv) ट्रेन का डिब्बा व माचीस

प्र० कलाकार ⇒ छावर चंद गहलोत जोधपुर
गोविन्द पारिक निवाई, टोंक
पुरुनाथ सपेरा जयपुर

(3) चरी नृत्य ⇒ किशनगढ़, AJ

लोकप्रिय → गुर्जर जाति की महिलाएँ

आयोजन → बारात की निकासी एवं अन्य मांगलिक अवसर

- नृत्य के दौरान सिर पर रखी चरी में कपासिया तेल से दीपक जलाया जाता है जिसे आढ़ा / भैरव कहते हैं।

प्रसिद्ध कलाकार → फलकु बाई
सुनिता रावत

Launchidea.in

[2] धार्मिक लोकनृत्य

- वह लोकनृत्य जो किसी लोक देवी / देवता, संत-सम्प्रदाय अथवा महापुरुष की आराधना में आयोजित होता है।

(1) अग्नि नृत्य ⇒ कतरियासर, ~~बाड़मेर~~ बीकानेर

- संत जसनाथ जी महाराज की आराधना में जसनाथी सिद्धों द्वारा किया जाने वाला नृत्य।

जनक → रुस्तम जी

प्र० कलाकार → लालनाथ, चौखानाथ, रेवंतनाथ

- बीकानेर महाराज गंगासिंह ने इस नृत्य को सर्वाधिक बढ़ावा दिया।

आयोजन - 1, 7, 11 (चैत्र, आश्विन, माघ)

विशेषताएँ ⇒

(1) केवल पुरुष भाग लेते हैं।

(2) नृत्य स्थल - धुणा

(3) नृत्य स्थल के चारों तरफ तरल पदार्थ का छिड़काव जमाव कहलाता है।

Launchideal.in

(4) नृत्य के दौरान जयकारा - फतेह - फतेह

(5) वाद्य - नगाड़ा, घण्टी, मंजीरा

(6) गीत - सिलोका

(7) मतीरा फोड़ना / मतीरा मुख में लेना (मतीरा - अंगारे)

(8) हल जोतना व कृषि कार्य करना।

(2) कक्क नृत्य ⇒ जैसलमेर

आयोजन - बसंत पंचमी के दिन

आराधना - प्रेम के देवता कामदेव को समर्पित

(3) कानुड़ा ⇒ चोहटन, बाड़मेर [→ कृष्ण को समर्पित, → भाद्रपद कृ० अष्टमी]

(4) थाली ⇒ फलोदी

- पाबुजी को समर्पित
- पुत्र जन्मोत्सव पर
- प० RJ में विवाह अवसर पर

(5) तेजा ⇒ नागौर - अजमेर

- सावन भाद्रपद मास में बरसात की कामना हेतु।
- पुरुष कलाकार एक हाथ में छाता लेकर।
- तेजाजी की आराधना

Laurchidea.in

(6) घमछड़ी ⇒ उदयपुर

आयोजन → गणेश चतुर्थी

- गणेश जी को समर्पित

(7) घुटक्कण / कड़कदण्डावत ⇒ करौली

आराधना → कैला देवी

- महिलाएं घुटनों के बल बैठ कर करती हैं।

(8) चौथ नृत्य ⇒ चौथ का बरवाड़ा, SM

- कंजर जाति की अविवाहित कन्याएं माघ कृष्ण चतुर्थी के दिन।

- चौथ माता की आराधना में।

(9) सांकल नृत्य ⇒ हनुमानगढ़ - चुरु

- केवल पुरुष

- भाद्रपद मास में गोगा जी को समर्पित

Launchidea.in

(10) घुड़ला नृत्य ⇒ जोधपुर

- आराधना – जोधपुर महाराजा सांतल देव
- आयोजन – चैत्र कृष्ण अष्टमी से गणगौर तक
  - केवल महिलाओं द्वारा सिर पर छिद्रित घड़ा / मटका रखकर।

नृत्य लोकगीत – घुड़ला (अजमेर सुबेदार मल्लु खां का सेनापति घुडले खां)

- मणिगांगुली ने घुड़ला नृत्य को राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय पहचान दिलाई।

- रूपायन संस्थान, बोरून्दा द्वारा इस नृत्य को संरक्षण किया गया।

(11) तेरहताली नृत्य ⇒

उद्गम ⇒ पादरला, पाली
वर्तमान ⇒ रुणेचा, (जै.), डीडवाना
आराधना ⇒ रामदेवजी व हींगलाज माता
विशेषता ⇒ (1) कामडिया पंथ की महिलाएं
(2) जमिन पर बैठकर किया जाता है।
(3) मुख्य वाद्ययंत्र = मंजिरा = 13 (9 पैर + 4 हाथ)
└ Right

(4) सहायक वाद्ययंत्र = तानपुरा / चौतारा / तंदुरा
↳ पुरुष संगत के दौरान प्रयुक्त

(5) नृत्य के दौरान कलाकार दाँतो के मध्य - कटार व सिर पर कलश रखती है।

(6) नृत्य का मुख्य आकर्षण - घरेलु कार्यों का प्रदर्शन
जैसे - (i) छाछ बिलौना
(ii) छाजले / सुप से अनाज साफ करना।
(iii) बच्चे को खिलाना etc.

प्रसिद्ध कलाकार → मांगी बाई, बानिना गाँव, चित्तौड़
- शादी - पादरला गाँव पाली (भैरूदास जी से)
- जेठ / गुरु - गौरम दास जी।

- प० नेहरु ने माँगी बाई को अन्तराष्ट्रीय पहचान दिलाई
- 1990 - संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार

अन्य कलाकार ⇒

महिला	पुरुष
नारायणी देवी	रूपदास जी
सोहनी देवी	लक्ष्मणदास जी

(12) गरबा नृत्य ⇒ डुंगरपुर + बाँसवाड़ा

- मुलत: गुजरात का लोक नृत्य।

आयोजन → शरदीय नवरात्रा में

- युगल नृत्य है।

- इस नृत्य में भक्ति, श्रृंगार व प्रेम रस का समन्वय है।

Launchidea.in

[3] जातिय एवं जनजातीय नृत्य

(1) मेव जाति ⇒ अलवर - भरतपुर क्षेत्र

(i) रतवाई नृत्य / खारी / संदुक नृत्य
  ↳ पुत्री की विदाई के समय केवल महिलाएं

(ii) रणबाजा → मेव जाति का युगल नृत्य

(2) नट एवं भाट ⇒

(i) शारीरिक नृत्य

(ii) कठपुतली नृत्य ⇒

- अरडु की लकड़ी से निर्मित नाचने वाली मुर्तियां कठपुतली कहलाती है।
- कठपुतली का घर - जयगढ़, जयपुर
- वर्तमान में प्रसिद्ध - उदयपुर
- कठपुतली का जादुगर - दादा पद्म जी
- Imp मुख्य सुत्रधार - स्थापक
- RJ में धागा कठपुतली सर्वाधिक लोकप्रिय
- 1965 में रोमानिया में आयोजित IIवें अन्तराष्ट्रीय कठपुतली महोत्सव में उदयपुर के कलाकारों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- संरक्षण - भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर द्वारा

Laundrea.in

(3) कथौड़ी जनजाति ⇒

- मूलत: महाराष्ट्र के निवासी।

RJ में → कोटड़ा - झाड़ोल

- कथौड़ी जनजाति की महिलाएं आभूषण नहीं पहनती हैं।

मुख्य कार्य → खैर के पेड़ से कत्था तैयार करना।
└ तनें से।

नृत्य ⇒ (i) होली नृत्य
└→ होली के अवसर पर केवल महिलाएं

(ii) मावलिया
└→ नवरात्रा पर पुरुषों का नृत्य

(4) कंजर जाति ⇒

- यह कोटा - बूंदी क्षेत्र में निवास करते हैं।
- हाकम राजा का प्याला पीकर कंजर झूठ नहीं बोलते हैं।
- देश में सर्वाधिक संगठित जाति।

नृत्य ⇒ (i) धाकड़ (केवल पुरुष)
└→ झालापाव - बीरा की कथा पर आधारित

(ii) कंजर तोड़ा
└→ युगल नृत्य

(iii) चकरी – बूंदी

फुँदी नृत्य

- आयोजन - भाद्रपद कृष्ण तीज
- अविवाहित कन्याएं भाग लेती हैं।
- वेशभुषा – घुसली (अत्यधिक लम्बा लहंगा)
- मुख्य आकर्षण – नृत्य के दौरान कलाकार अपने हाथ से इस प्रकार का अभिनय करते हैं मानो यह प्रतीत हो रहा है कि वह अपने प्रीयतम से श्रृंगार सामग्री मंगाने का अनुरोध कर रही हों।
- प्रसिद्ध कलाकार – शान्ता, फूलवां, फिलमा
- चाचौड निवासी शाहिद खान ने इस नृत्य को प्रसिद्धी दीलाई।

(iv) लाठी नृत्य

└ यह भील व कंजर दोनो समुदाय के द्वारा किया जाता है (दोनो हो तो – कंजर)

Launchidea.in

(5) गरासिया जनजाति ⇒ आबु - पिण्डवाडा (सिरोही)

- जनसंख्या की दृष्टि से - III[rd] जनजाति

Trick - " गोलू मामो जवारा में कुदो । "

गोलू → गौर / गर्वा, लुर

मामो → मोरिया, मांदल

जवारा → जवारा, वालर, रायण

कुदो → कुद, दोहा

पुरुष	महिला	युगल
मोरिया रायण	लुर मांदल गौर / गर्वा	जवारा वालर कुद दोहा

(i) रायण नृत्य

- गरासिया पुरुषों द्वारा इस नृत्य में प्रतीकात्मक युद्ध का अभिनय किया जाता है।
- गरासियों की वीरता व शौर्य का प्रतीक

(ii) मोरिया नृत्य

- विवाह के अवसर पर केवल पुरुषों का नृत्य
- हाथ में तलवार लेकर जमीन पर बैठकर किया जाता है।

Laurchidea.in

(iii) ~~लुण~~ लुर नृत्य ⇒

- लुर गौत्र की गरासिया महिलाए लडकी पक्ष से रिश्ते की मांग करते समय।

(iv) गौर / गर्वा नृत्य

- यह नृत्य अविवाहीत कंन्याएं गणगौर के अवसर पर।

(v) वालर नृत्य

- महिला - पुरुष दोनो भाग लेते हैं।
- बिना वाद्ययंत्र के आयोजन
- इस नृत्य की शुरुआत पुरुष कलाकार एक हाथ में तलवार व दुसरे हाथ में छाता लेकर करता है।
- 30 अप्रैल 1991 वालर नृत्य पर 2.5 ₹ का डाक टिकट

(vi) कुद नृत्य

- दो पंक्तियों में महिलाओ व पुरुषो द्वारा किया जाता है।
- एक पक्ष ताली बजाता है दुसरा पक्ष नृत्य करता है।

Launchidea.in

(6) सहरिया जनजाति ⇒ शाहबाद - किशनगंज (बांरा)

- जनसंख्या की दृष्टि से - IV^th जनजाति
- भारत सरकार द्वारा आदिम जनजातिय समूह में शामिल।

Trick ⇒

"सहर का शिकारी इन्द्रपरि के लिए खेला, लहगा व बिच्छिया लाया।"

- सहर → सांग नृत्य
- शिकारी → शिकारी → पुरुष प्रधान
- इन्द्रपरि → इन्द्रपरि
- खेला → खेला
- लहगा → लहंगी → फसल कटाई के समय पुरुष - गीत गाते हैं तथा महिलाएं नृत्य करती हैं।
- बिच्छिया → बिच्छवा

(7) डामोर जनजाति ⇒ सीमलवाड़ा (डूंगरपुर)

- लगभग 92000 जनसंख्या वाली जनजाति।
- इस जनजाति में पुरुष भी महिलाओं की तरह आभुषण पहनते हैं।

नृत्य → (i) पराणीया - पुरुष
(ii) भरटिया - महिला

(8) मीणा जनजाति ⇒ जयपुर

- जनसंख्या की दृष्टि से → RJ की I^st जनजाति

नृत्य → रसिया नृत्य

↳ मांगलिक अवसर पर मीणा महिला व पुरुषों द्वारा किया जाता है।

(9) कालबेलिया जाति ⇒ जैसलमेर

नृत्य → (i) इण्डोणी
(ii) पणिहारी
(iii) बिच्छुडा
} गीत पर आधारित नृत्य

(iv) शंकरिया – प्रेम कथा पर आधारित एक युगल नृत्य (सपेरा की)

(v) बागड़िया – कालबेलिया जाति के महिला व बच्चों द्वारा कौशल दिखाकर बदले में पैसे की मांग करती हैं।

Launchidea.in

(vi) कालबेलिया नृत्य ⇒

- अन्य नाम - स्नेक चार्मर डांस
- वाद्ययंत्र - पुंगी / बीन
- वर्तमान में यह नृत्य गीत पर आधारित है।
- वेशभूषा - काले रंग के वस्त्र
- प्रशिक्षण केन्द्र - कालबेलिया डांस स्कूल, हाथीगांव, आमेर
- RJ का एकमात्र लोक नृत्य। जिसे वर्ष 2010 में UNESCO की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया।
- प्रसिद्ध कलाकार ⇒

(a) गुलाबो सपेरा - कोटड़ा, अजमेर
- 2016 - पद्म श्री
- ब्रजकीलित व मकबुलियत विधा में निपुर्ण।
- UNESCO द्वारा सांस्कृति धरोहर के संरक्षण हेतु इन्हें ब्राण्ड एम्बेसडर बनाया गया।

(b) कंचन सपेरा

(c) लीला सपेरा

(d) कमली

(e) राजकी

(10) भील जनजाति ⇒ (1) बांसवाड़ा
(2) डूंगरपुर
(3) उदयपुर

- RJ की सबसे प्राचीन जनजाति।
- जनसंख्या की दृष्टि से – II^nd

Trick ->

ने – नेजा / खेल
हा – हाथीमन्ना (पुरुष)
ल्वं – x
गवरी – गवरी / राई नृत्य (पुरुष)
गैरों – गैर नृत्य (पुरुष)
गे – गौसाई
युद्ध – युद्ध (पुरुष)
में – मेवड़ा

रम – रमणी
पी – पेजण, पालीनाच
टर – टायरिया
द्विचकी – द्विचक्री
घुम्मी – घुमरा (महिला)
स्या – स्याद

इन्दरी नृत्य

(i) हाथीमन्ना नृत्य
- विवाह के अवसर पर।
- केवल पुरुषों द्वारा।
- हाथ में तलवार लेकर जमीन पर बैठकर कीया जाता है।

(ii) युद्ध नृत्य → भीलों की वीरता व शौर्य का प्रतीक
- नृत्य में युद्ध का प्रतीकात्मक अभिनय होता है।
- केवल पुरुष भाग लेते हैं।

(iii) द्विचक्री नृत्य

- युगल नृत्य
- दो वृत्ताकार घेरों में आयोजित
- एक पक्ष गीत गाता है दुसरा पक्ष नृत्य करता है।

Q. होली पर आयोजित भील जनजाति का मुख्य नृत्य है?

↳ गैर - पुरुष

Q. होली के तीसरे दिन भील जनजाति द्वारा कीया जाने वाला नृत्य?

└ नेजा / खेल - युगल

(iv) गवरी / राई नृत्य ⇒

- पर्वतीय क्षेत्र के भीलों द्वारा आयोजित होने के कारण मेरुनृत्य / मेरुनाट्य के नाम से लोकप्रीय।
- नृत्य व नाटक का समन्वय
- सबसे प्राचीन नृत्य (लोक-नृत्य)
- शिव-पार्वती को समर्पित
- मुख्य वाद्ययंत्र - मांदल

Launchidea.in

★ मुख्य विशेषताऐं ⇒

(1) केवल पुरुष कलाकार भाग लेते हैं।

लिम्न रूपों में →

(a) दैविय पात्र - पुरिया (शिव), रूईया (पार्वती जी)

(b) मानव पात्र - बुढ़िया (मुख्य), सामट्या, खड़क्या

(c) दानव पात्र - भंवरा, खरालिया, हटड़, भूतर

(d) पशु पात्र - रीछं (मादा), सुअर

(2) मुख्य सूत्रधार → कुटकुड़िया

(3) कुल 40 दिन तक आयोजन

(भाद्रपद - आश्विन मास)

(रक्षाबन्धन के अगले दिन से नवरात्रा तक)

(4) शिव - भस्मासुर की कथा पर आधारित।

(5) गवरी की गम्मत / धाई

└ गवरी नृत्य के विभिन्न प्रसंगो को मुख्य प्रसंग से जोड़ना।

(6) वलावण - नृत्य के अंतिम दिन (40th day) शिव - पार्वती की प्रतिमा का पवित्र जलाशय में विसर्जन

(7) लघुनाटिकाऐं - मियावड़, बटवड, कानगुजरी

Launchidea.in

[५] क्षेत्रीय लोकनृत्य

- वह लोकनृत्य जो पुरे RJ में आयोजित नहीं होकर स्थान विशेष पर आयोजित होते हैं।

(1) अजमेर संभाग ⇒

(i) ब्यावर जिला ->

(i) बीरबल नृत्य
(ii) मयुर नृत्य
(iii) भैरव नृत्य

- चैत्रमास में बादशाह की सवारी के समय आयोजित
  - -> बादशाह -> टोडरमल
  - -> वर्तमान में बादशाह व्यास परिवार से सम्बन्धित।

(ii) भीलवाड़ा जिला ⇒

नाहर नृत्य ⇒ माण्डल

- मुगल बादशाह जहांगीर के काल में प्रारम्भ
- शाहजहा के मनोरंजन हेतु प्रारम्भ
- केवल पुरुष भाग लेते हैं।
- वर्तमान में होली के 13वें दिन (~~चै~~ चैत्र कृ. 13)
  -> रंगतेरस

Launchidea.in

- पुरुष कलाकार शरीर पर सफेद रुई लगाकर विभिन्न मुखौटे धारण कर नृत्य करते हैं।

(मुख्य मुखौटा - शेर)

- अन्य नाम - स्वांग नृत्य

Note ⇒ नारछरी, भरचर, गंजीफा, आंख मीछणी, गिलीडण्डा, सतौलिया, रस्सड़ी, राईड़ा इत्यादि राजस्थानी खेलो के नाम।

(2) बीकानेर संभाग ⇒

★ बीकानेर जिला ⇒ ऊँट नृत्य

↳ प्र. कलाकार - नेकराम

★ चुरु जिला ⇒ कबुतरी नृत्य

(3) जयपुर संभाग ⇒

★ सीकर जिला ⇒

(1) गीदड नृत्य ⇒

- होली से एक सप्ताह पहले प्रारम्भ होकर होली तक आयोजित

Lalchandidea.in

वाद्ययंत्र - नगाड़ा, ढोल

- केवल पुरुष द्वारा
- नृत्य में कलाकारों की चाल मनजोर कहलाती है।
- नृत्य के दौरान पुरुषों द्वारा रचे जाने वाले मुख्य स्वांग → सेठ - सेठाणी, दुल्हा - दुल्हन, शिकारी, बाजीगर, साधु etc.

(2) चंग नृत्य ⇒

- डाण्डारोपण से होली तक आयोजित (लगभग 1 माह)
- केवल पुरुष भाग लेते हैं।

वाद्ययंत्र - चंग

(3) डफ नृत्य ⇒

- बंसत पंचमी से होली तक आयोजित
- केवल पुरुष द्वारा

वाद्ययंत्र - डफ

★ झुंझुनु जिला ⇒ (i) जिंदाद नृत्य
(ii) लहुर नृत्य – चिड़ावा
└ गणेश चतुर्थी के दिन छोटे बच्चों द्वारा आयोजित नृत्य।

(4) कोटा संभाग ⇒

★ कोटा जिला ⇒ सुमर नृत्य
★ बुंदी जिला ⇒ कुंभकर्ण नृत्य
★ झालावाड़ जिला ⇒ बिन्दोरी
↳ होली पर व पुरुष प्रधान
★ बांरा जिला ⇒ धनुषलीला नृत्य
↳ अटरू कस्बे में शिवजी का धनुष स्थानिय जनता द्वारा तोड़ते हुए किया जाता है।

(5) भरतपुर संभाग ⇒

★ भरतपुर जिला ⇒
(i) बम नृत्य ⇒ गीत → रसिया
[बम नगाड़ा का सुचक
[पुरुष कलाकार फाल्गुन मास में ~~पुरुष~~ नई फसल की आगमन की खुशी में।

Launchidea.in

(ii) चर्वा नृत्य ⇒

- चर्वा कांसे से निर्मित घड़ा होता है।
- माली जाति की महिलाए ~~पुत्र~~ पुत्र प्राप्ति पर।

(iii) चरकुला ⇒

- मुलत: UP का नृत्य
- केवल महिलाएं भाग लेती हैं।
- राधा जी के जन्म दिवस पर प्रारम्भ
- सिर पर 108 दिपक जलाकर।
- वर्तमान में मांगलिक अवसरों पर आयोजित

प. कलाकार – (1) कीरण कसेरा
(2) मानसी
(3) कोमल देवी

(6) उदयपुर संभाग ⇒

☆ उदयपुर जिला ⇒ (1) हरणो / लोवड़ी
(2) बलेदी नृत्य

☆ राजसमंद ⇒ डांग नृत्य – नाथद्वारा

इस नृत्य को मोहनलाल सुखाड़िया ने प्रसिद्धि दिलाई।

★ चित्तौड़गढ़ जिला ⇒ बारूद नृत्य - बरसी

- दीपावली के अवसर पर दो दलों द्वारा आयोजित नृत्य
- 2001 से प्रतिबन्धित

★ प्रतापगढ़ जिला ⇒ मोहिली नृत्य ⇒

कांठल - धरियावाद क्षेत्र की महिलाओं द्वारा जमीन पर बैठकर किया जाना वाला लोकनृत्य।

★ वागड़ क्षेत्र ⇒ (1) पालीनौच

(2) पेंजण

(3) घुमर - घुमरा नृत्य - मृत्यु पर

(7) जोधपुर संभाग ⇒

★ जोधपुर जिला ⇒

(1) डाण्डिया नृत्य ⇒ केवल पुरुष

- फाल्गुन मास में आयोजित

वाद्ययंत्र - ढोल

- जोधपुर महाराजा अभय सिंह द्वारा गुजरात शासक सर बुलंद खां को पराजित करने की खुशी में।

(शम्भुसाण लेप लाए)

Launchidea.in

(2) झांझी नृत्य

(3) धमक - मुसल नृत्य ⇒

- किसी महामारी के प्रकोप से बचने हेतु महिलाओं द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में आयोजित।

(4) कीलियो - बोरियो नृत्य ⇒

- घर पर प्रथम बार जवाई के आगमन पर आयोजित

विवाद्ययंत्र - पीपा

Q. राजस्थान के किस लोकनृत्य में वाद्ययंत्र से कीली - चउस के समान ध्वनि की उत्पत्ति होती है ?

└ कीलियो - बोरियो नृत्य

★ बाड़मेर जिला ⇒

(1) मछली नृत्य ⇒

- कंजर व बंजारा जाति के लोगों द्वारा

आयोजन - शरद पूर्णिमा / आश्विन

- अविवाहित कन्याएं भाग लेती है।

- जल देवता व माछिरी नामक मछली की कथा पर आधारित।

- एकमात्र लोकनृत्य जो खुशी से प्रारम्भ होकर दुःख के साथ खतम होता है।

(2) रासतुड़ा ⇒

- विवाह के पश्चात् वधु पक्ष की महिलाएं नव वधु के तलाक नहीं होने की कामना करते हैं।

★ बालोतरा जिला ⇒ गैर नृत्य
- कनाना गांव
- लाछोटा गांव

- केवल पुरुष भाग लेते हैं।

वाद्ययंत्र → ढोल

आयोजन → होली

गीत → फाग, धमाल, रंगीला

खाण्डे – नृत्य में पुरुष कलाकारो के हाथों में लकड़ी से निर्मित तलवार नुमा डण्डियां।

आंगी – नृत्य में रंगबिरंगी पोशाक,

प्रकार →

(1) आंगी - बांगी गैर – कनाना

(2) रावजी की गैर – मण्डोर

(3) घुमरा गैर – भीलवाड़ा
↳ निहाल अजमेरा ने इस नृत्य की शुरूआत की।

(4) तलवारों की गैर – मेनार, UDR

- मेवाड महाराणा अमर सिंह-I के काल में शुरुआत।

Launchidea.in

★ जैसलमेर जिला ⇒ (i) बजुर → दीपावली के अवसर पर महिलाओं द्वारा।
(ii) हिंडौल्या

Note - हिंडौल्या महोत्सव - पुष्कर

★ पाली जिला ⇒ सुंघणी नृत्य ⇒

- भिमाजा व गोडिया जाति की अविवाहित कन्याएं अत्यधिक मात्रा में इत्र लगाकर यह नृत्य करती हैं।

★ जालौर जिला ⇒

(i) ढोल नृत्य ⇒

- खीवसिंह के प्रेम विवाह से इस नृत्य की शुरुआत।
- जयनारायण व्यास ने इस नृत्य को लोकप्रिय बनाया।
- नृत्य में ढोल थाकना शैली में बजाया जाता है।
- विवाह व अन्य मांगलिक अवसरो पर आयोजित।
- केवल पुरुष भाग लेते हैं।
- ढोल नृत्य में ढोल की ध्वनि परिणय कहा जाता है।

(2) लुम्बर नृत्य ⇒

- राईका / रैबारी समुदाय में प्रचलित।
- विवाह के अवसर पर पैर की मधुर ध्वनि के साथ ताली बजाते हुए किया जाने वाला नृत्य।
- केवल महिलाएं भाग लेती हैं।

(3) शुक्कर नृत्य

☆ सिरोही जिला ⇒

- पर्यटन विभाग द्वारा ग्रीष्म व शरद महोत्सव के समय यहां बुर्जुगों का नृत्य का आयोजन करवाया जाता है।

Launchidea.in

NOTE => आदिवासी क्षेत्र में इन्द्र को रिजाने के लिए महिलाए धाड-नृत्य करती हैं।